वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 170

चारित्रचक्रवर्ती

आचार्यश्री शांतिसागर पूजन

–: लेखिका :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के
75वें हीरक जयन्ती-शरदपूर्णिमा 2008 के अन्तर्गत आयोजित
प्रथमाचार्य शांतिसागर अवदान सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

Website : www.jambudweep.org

E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

तृतीय संस्करण	आश्विन शु. 15, वीर नि.सं.2534	मूल्य
3300 प्रतियाँ	14 अक्टूबर 2008	12/-रु.
	(शरदपूर्णिमा)	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण, सन् 1998	द्वितीय संस्करण, सन् 2002
2200 प्रतियाँ	5000 प्रतियाँ

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

जैसा कि शास्त्रों में वर्णन आता है-

गुरुभत्ति संजमेण य, तरंति संसार सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मण मरणं ण पावेंति।।

अर्थात् गुरुभक्ति करने वाले भव्यप्राणी घोर संसार-सागर को पार कर लेते हैं, आठों कर्मों का छेदन करते हैं तथा पुनः जन्म-मरण को नहीं प्राप्त करते हैं।

वास्तव में गुरू की महिमा अपरम्पार है। हम लोग बहुत सौभाग्यशाली हैं, भले ही हमने उन चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के दर्शन नहीं किये, फिर भी उनके दर्शन करने वाली पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन करके हम उनकी (आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज) महानता का भी सहज अनुमान लगा सकते हैं।

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने इस पुस्तक की रचना करके जनमानस के हृदय में गुरुओं के प्रति श्रद्धा का स्त्रोत प्रवाहित किया है। इसमें प्रकाशित पूजा, चालीसा, भजन, आरती को करके सभी लोग अपने कर्मों की निर्जरा करें। इससे पूर्व भी पूज्य आर्यिका श्री द्वारा रचित समसामयिक भजन आदि के द्वारा आप सभी देव-शास्त्र-गुरू का गुणानुवाद करते रहे हैं। उसी श्रृंखला में ग्रंथमाला का यह पुष्प आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के हीरक जयंती महोत्सव के अवसर पर आयोजित प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर अवदान सम्मेलन के प्रसंग में इस पुस्तक का तृतीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है। यह पुस्तक आपके दर्शन-ज्ञान-चारित्र की वृद्धि करे, यही शुभकामना है।

आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज एवं आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज का संक्षिप्त-परिचय

लेखिका ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व भारत की इस वसुधा पर दिगम्बर जैन मुनियों के दर्शन बहुत दुर्लभ थे। कतिपय साधु ही आत्मकल्याण करते देखे जा सकते थे। ऐसी विषम परिस्थिति में दक्षिण भारत के भोजग्राम में पिता भीमगौंडा एवं माता सत्यवती की बगिया में एक पुष्प खिला। बालक का नाम बड़े ही प्यार से सातगौंडा रखा गया।

उस समय की परम्परा के अनुसार उनका बालविवाह कर दिया गया। विवाह होने के बाद भी उनका जीवन ब्रह्मचारी जैसा ही रहा। सन् १९१३ में वैराग्य भावना से पूर्णतया ओतप्रोत इस बालक ने श्री देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से क्षुल्लक दीक्षा प्राप्त कर ''शांतिसागर'' नाम प्राप्त किया पुनः १९२० में मुनिदीक्षा लेकर बीसवीं शताब्दी में मुनिपरम्परा को पुनरुज्जीवित किया। सन् १९२४ में समडोली की जनता ने इन्हें सर्वसम्मति से ''आचार्यपद'' प्रदान किया तथा १९२४ में ही इन्हें ''चारित्रचक्रवर्ती'' उपाधि से अलंकृत किया गया। दक्षिण भारत के इस दैदीप्यमान सूर्य की किरणों से सम्पूर्ण भारत आलोकित हो उठा।

आपने अपने ३५ वर्ष के दीक्षित जीवन में साढ़े पच्चिस वर्ष उपवास में बिताये तथा समय-समय पर चींटी, सर्प आदि अनेक उपसर्गों को निर्भीकतापूर्वक सहन किया तथा बारह वर्ष की उत्कृष्ट सल्लेखना ग्रहण कर सन् १९५५ में कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर भादों शुक्ला द्वितीया को समाधिपूर्वक इस नश्वर शरीर का त्याग कर दिया।

आपने समाधि से पूर्व अपना प्रथम आचार्यपट्ट अपने सुयोग्य शिष्य मुनि श्री वीरसागर महाराज को प्रदान किया। वीरसागर जी महाराज का जन्म महाराष्ट्र प्रान्त के ''ईर'' ग्राम में सेठ रामसुख की पत्नी भाग्यवती की

पवित्रकुक्षि से हुआ। सन् १८७६ की वह आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा आज भी ''गुरुपूर्णिमा'' के नाम से प्रसिद्ध है। माता-पिता ने इनका नाम ''हीरालाल'' रखा। युवा होने पर इन्होंने विवाह नहीं किया अपितु ब्रह्मचर्यव्रत अंगीकार कर लिया।

एक बार ब्र. हीरालाल जैन एवं ब्र. खुशालचंद जैन शान्तिसागर जी महाराज के पास गये और उनको नमस्कार किये बिना ही बैठ गए और कहने लगे कि चूँकि आपमें चतुर्थकालीन मुनियों के समान ऋद्धियाँ आदि नहीं दिखती हैं अतः हम आपको मुनि नहीं मानते। शांतिसागर जी महाराज मुस्कराए, फिर कुछ देर बाद बोले-भैया! वो सामने पेड़ किस चीज का है? ब्र. जी बोले-आम का पेड़ है। महाराज जी ने कहा-मैं इसे आम का पेड़ नहीं मानता क्योंकि इसमें आम का फल तो है नहीं। ब्र. जी समझाने लगे-महाराज! ये आम का ही पेड़ है अभी सीजन न होने से इसमें फल नहीं हैं। जब मौसम आयेगा तो इसी पेड़ में आम आएँगे। महाराज जी बोले-भैया! ऐसे ही हम भी साधु हैं, अभी मोक्ष का सीजन नहीं है, जब सीजन आयेगा तो मोक्ष इसी दिगम्बर वेश से होगा। इतना सुनकर दोनों ब्रह्मचारी नतमस्तक हो गये और उनकी शिष्यता स्वीकार कर ली पुनः सन् १९२४ में आचार्यश्री से मुनिदीक्षा लेकर 'वीरसागर' एवं ''चन्द्रसागर'' नाम प्राप्त किया। सन् १९५५ में आचार्यश्री शांतिसागर जी की समाधि के पश्चात् मुनि श्री वीरसागर जी को ''आचार्यपद'' प्रदान किया गया। कई वर्षों तक धर्मप्रभावना करने के पश्चात् सन् १९५७ में जयपुर खानिया चातुर्मास के मध्य आश्विन कृष्णा अमावस्या को आचार्यश्री ने इस नश्वर शरीर का त्याग करके अविनश्वर पद प्राप्त कर लिया।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आचार्यद्वय की पूजन, चालीसा, भजन, आरती के माध्यम से आप सभी अपने हृदय में गुरुभक्तिरूपी किरणों को प्रस्फुटित करें तथा उनकी प्रभावी शिष्या गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन-आरती आदि भी दी गयी हैं इन सभी भक्ति रचनाओं के द्वारा समय-समय पर विशेष गुरुभक्ति करके अपने ज्ञान-चारित्र की वृद्धि करें यही मंगल कामना है।

राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान	:	टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि	:	आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१ (सन् १९३४)
गृहस्थ का नाम	:	कु. मैना
माता-पिता	:	श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत	:	ई. सन् १९५२ में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
क्षुल्लिका दीक्षा	:	चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में
आर्यिका दीक्षा	:	वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
साहित्यिक कृतित्व	:	अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं २५० विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) विकास की प्रेरणा, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा।

महोत्सव प्रेरणा : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२ से १९८५), समवसरण श्रीविहार (१९९८ से २००२), महावीर ज्योति (२००३-२००४) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषय-सूची

पूजा क्रम-		*पृ. सं.*
१.	**आचार्य श्री शांतिसागर जी की पूजा**	१
२.	**आचार्य श्री वीरसागर जी की पूजा**	७
३.	**श्री ज्ञानमती माताजी की पूजा**	१३
४.	**श्री शांतिसागर चालीसा**	१९
५.	**श्री वीरसागर चालीसा**	२२
६.	**ज्ञानमती माताजी का बारहमासा**	२५
७.	**श्री शांतिसागर जी की आरती**	३६
८.	**श्री वीरसागर जी की आरती**	३८
९.	**श्री ज्ञानमती माताजी की आरती**	३९-४०

आभार

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की 75वीं हीरक जयन्ती-शरदपूर्णिमा 2008 के त्रिदिवसीय महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित 'आचार्य शांतिसागर अवदान सम्मेलन' के शुभ अवसर पर प्रकाशित इस पुस्तक के प्रकाशन में श्रीमती विमला जैन ध.प. श्री आर.सी. जैन-बरेली (उ.प्र.) ने ज्ञानदानस्वरूप अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया, एतदर्थ संस्थान उनके प्रति आभार व्यक्त करता है।

-सम्पादक

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) विकास की प्रेरणा, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा।

महोत्सव प्रेरणा : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२ से १९८५), समवसरण श्रीविहार (१९९८ से २००२), महावीर ज्योति (२००३-२००४) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषय-सूची

पूजा क्रम-		*पृ. सं.*
१.	**आचार्य श्री शांतिसागर जी की पूजा**	१
२.	**आचार्य श्री वीरसागर जी की पूजा**	७
३.	**श्री ज्ञानमती माताजी की पूजा**	१३
४.	**श्री शांतिसागर चालीसा**	१९
५.	**श्री वीरसागर चालीसा**	२२
६.	**ज्ञानमती माताजी का बारहमासा**	२५
७.	**श्री शांतिसागर जी की आरती**	३६
८.	**श्री वीरसागर जी की आरती**	३८
९.	**श्री ज्ञानमती माताजी की आरती**	३९-४०

श्री शांतिसागर जी महाराज की पूजन

स्थापना

पूजन करो रे,

श्रीशान्तिसिन्धु आचार्य प्रवर की, पूजन करो रे-२।
भारतवसुन्धरा ने जब, मुनियों के दर्श नहिं पाये।
सदी बीसवीं में तब श्री, चारित्रचक्रवर्ती आए।।
दक्षिण भारत भोजग्राम ने, एक लाल को जन्म दिया।
उसने ही सबसे पहले, मुनिपरम्परा जीवन्त किया।।
मुनिपरम्परा जीवन्त किया।।

पूजन करो रे,

श्रीशान्तिसिन्धु आचार्य प्रवर की, पूजन करो रे-।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीश्रीशान्तिसागरआचार्यवर्य ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीश्रीशान्तिसागरआचार्यवर्य ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीश्रीशान्तिसागरआचार्यवर्य ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

(तर्ज- तीरथ करने चली सती.....)

दीक्षा लेकर बने मुनि, निज कर्मकलंक जलाने को।
कैसे होते हैं मुनिवर, यह बतला दिया जमाने को।।बतला....
सागर सम गंभीर तथा, गंगा जल सम शीतल वाणी।
जीवन में साकार किया, प्रभु कुंदकुंद की जिनवाणी।।
ऐसे गुरु के पद में आए, हम जलधार चढ़ाने को,
हम जलधार चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन का शीतलता गुण, तुम आगे मानो व्यर्थ हुआ।
विषधर का विष भी तुम पर, चढ़ भक्ति भाव कर उतर गया।।
हम भी निज शीतलता हेतू, लाए गंध चढ़ाने को।
लाए गंध चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयवासना के बंधन, जग को निज वश में करते हैं।
तुम जैसे मुनिगण तप करके, मोक्षमार्ग को वरते हैं।
शुभ्र धवल अक्षत ले आए, तुम पद पुंज चढ़ाने को।
तुम पद पुंज चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बालविवाह हुआ फिर भी, ब्रह्मचारी जीवन बीता था।
सत्यवती माँ ने अपनी, ममता से तुमको सींचा था।।
कामदेव वश करने हेतू, आए पुष्प चढ़ाने को,
आए पुष्प चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पैंतिस वर्षों तक दीक्षित, जीवन में घोर तपस्या की।
साढ़े पच्चिस वर्ष तुम्हारे, उपवासों की संख्या थी।।
मिले हमें भी तपशक्ती, आए नैवेद्य चढ़ाने को।
आए नैवद्य चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण से उत्तर में आकर, ज्ञान का दीप जलाया था।
नग्न दिगम्बर वेष मुनी का, सब जग को दिखलाया था।।
घृत दीपक ले हम भी आए, मोह अन्धेर नशाने को।
मोह अन्धेर नशाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों को कृश करने वाले, वीर पुरुष कहलाते हैं।
तुम जैसा सुसमाधिमरण, बिरले साधू कर पाते हैं।
धूप जलाकर चाह रहे हम, कर्म समूह जलाने को।
कर्म समूह जलाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फल की चाह में तुमने, नग्न दिगम्बर व्रत धारा।
जिनवर के लघुनन्दन बनकर, मोक्षमार्ग को साकारा।।
फल का थाल चढ़ाने आए, तुम जैसा फल पाने को।
तुम जैसा फल पाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु अवस्था धारण कर, क्रम-क्रम से श्रेणी बढ़ती है।
कर्म निर्जरा के बल पर, अरिहन्त अवस्था मिलती है।।
गुरु चरणों में इसीलिए हम, आए अर्घ्य चढ़ाने को।
आए अर्घ्य चढ़ाने को।। दीक्षा लेकर.....

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छन्द

सागर जहाँ गंभीरता में सुप्रसिद्ध है।
गुरु शान्तिसिन्धु के समक्ष वह भी तुच्छ है।।
जहाँ शांति का जल सर्वदा कल्लोल करे है।
उन गुरु चरण में हम भी शांतिधार करे हैं।।१।।

शान्तये शान्तिधारा।

स्याद्वाद के पुष्पों से तव उद्यान खिल रहा।
तुमसे ही आज मुनिवरों का दर्श मिल रहा।।
उपकार तुम्हारा न धरा भूल सकेगी।
खुद पुष्प अंजली से पुष्प वृष्टि करेगी।।२।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज–बाबुल की.....

गुरु शान्तिसिन्धु की पूजन से, आतम सुख का भण्डार मिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।। टेक.।।
आषाढ़ असित षष्ठी इसवी सन्, अट्ठारह सौ बहत्तर में।
पितु भीमगौंड़ माँ सत्यवती से, जन्म लिया इक बालक ने।।
शुभ नाम सातगौंडा पाया, तब भोज ग्राम के भाग्य खिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।१।।
ईस्वी सन् उन्निस सौ तेरह, शुक्ला तेरस शुभ ज्येष्ठ तिथी।
देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से ''उत्तूर'', में क्षुल्लक व्रत दीक्षा ली।।
निज पर कल्याण भावना ले, गुरु शांतिसिन्धु शिवद्वार चले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।२।।
सन् उन्निस सौ बीस में फिर, देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से ही।
यरनाल पंचकल्याणक में, श्रीशान्तिसिन्ध मुनि बने वहीं।।
उस फाल्गुन शुक्ला चौदश को, उनके अन्तर्मन द्वार खुले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।३।।
अट्ठाइस मूलगुणों में रत, मुनिवर की ख्याती फैल रही।
आचार्य बने वे सर्वप्रथम, समडोली धरा पवित्र हुई।।
गुरुओं के गुरु वे बने स्वयं, निज में जब मूलाचार पले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।४।।
तव कृपा प्रसाद से ताम्रपट्ट पर, धवल ग्रन्थ उत्कीर्ण हुआ।
तव चरणों में नास्तिक जीवों का, अहंकार निर्जीर्ण हुआ।।

मुनि श्रावक के व्रत ले लेकर, तुम वृक्ष में पुष्प हजार खिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।५।।
सन् पचपन कुंथलगिरि पर द्वादश,वर्ष सल्लेखना पूर्ण किया।
भादों सुदि दुतिया को नश्वर, काया को तुमने त्याग दिया।।
लाखों जनता के नेत्रों से, तब अश्रूधार अपार चले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।६।।
युगपुरुष! तेरे उपकारों का, बदला न चुकाया जा सकता।
तेरी श्रेणी में और किसी, साधू का त्याग न आ सकता।।
तू तो तुझमें ही समा गया, बस आज तेरी जयकार मिले।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।७।।
चारित्रचक्रवर्ती गुरु की, जयमाल गूंथ कर लाए हैं।
बीसवीं सदी के प्रथम सूरि, के चरण चढ़ाने आए हैं।
''चन्दनामती'' मुझको भी तुम सम, गुण के कुछ संस्कार मिलें।
गुरुवर के दर्शन वन्दन से, शाश्वत सुखशान्ति बहार मिले।।८।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तीआचार्यश्रीशान्तिसागराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

शांतिसिन्धु आचार्य की, पूजन यह सुखकार।
जो करते श्रद्धा सहित, होते भव से पार।।

❖इत्याशीर्वादः❖

आचार्य श्रीवीरसागर महाराज की पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छन्द)

महावीर पथ के अनुयायी, वीरसिन्धु आचार्यप्रवर।
शान्ति सिन्धु के प्रथम शिष्य, आर्यिका ज्ञानमति के गुरुवर।।
उन गुरु शिष्य की गरिमा से, लगता है अनुमान सहज।
तुम थे असली रत्नपारखी, दृष्टि तुम्हारी सदा सजग।।१।।
उन आचार्य वीरसागर की, पूजा आज रचाऊँ।
आह्वानन स्थापन करके, अपने निकट बुलाऊँ।।
हे गुरुवर! मम हृदय विराजो, अभिलाषा यह मेरी।।
पुष्पों की अंजलि भरकर के, करूँ थापना तेरी।।२।।

दोहा– **गुरुपूजा बस एकली, गुरुपद देन समर्थ।**
भवदधि नौका सम यही, शेष सभी कुछ व्यर्थ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीवीरसागराचार्यवर्य ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीवीरसागराचार्यवर्य ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीवीरसागराचार्यवर्य ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक

जग के शीतल स्वादिष्ट पेय से, प्यास नहीं बुझ पाई है।
अतएव वीतरागी गुरु के, चरणों की स्मृति आई है।।

जलधारा करने से शायद, इच्छाओं की उपशान्ती हो।
उन तृषा परीषहजयी गुरू की, पूजा से सुख प्राप्ती हो।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....

चन्दन गुलाबजल इत्रादिक से, कायउष्णता शांत हुई।
पर कर्मों की जलती ज्वाला से, आत्मा नहिं उपशांत हुई।।
चन्दन गुरुपद में लेपन से, भवताप की उपशान्ती होगी।
उन उष्णपरीषहविजयी की, पूजन से सुखप्राप्ती होगी।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं....।

चारों गतियों में क्षत विक्षत, कायों में भी मैं पड़ा रहा।
अक्षय आतम नहिं पहचाना, भव चतुष्पथों पर खड़ा रहा।।
अब अक्षतपुंज सुगुरु चरणों में, अर्पण करने आया हूँ।
अक्षय सुख पाने हेतु दिगम्बर, मुनि को नमने आया हूँ।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.....।

मकरध्वज ने सारे जग को, निज के आधीन बनाया है।
पर बालब्रह्मचारी के सम्मुख, वह न कभी टिक पाया है।।
अब पुष्प चढ़ाऊँ गुरु चरणों में, काम व्यथा नश जाएगी।
उन नग्न परीषह विजयी गुरु की, पूजा शान्ति दिलाएगी।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...।

रसना इन्द्रिय की लोलुपता, कितने ही पाप कराती है।
भोजन करने के बाद भी वह, लम्पटता नहिं मिट पाती है।।
अब इस नैवेद्य थाल से गुरु, पूजन कर क्षुधा शांत होगी।
उन क्षुधा परीषह विजयी मुनि, वन्दन से परमशांति होगी।।
ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

सब तरह तरह के फानूसों से, महल सजाए जाते हैं।
चंचल विद्युत के नवप्रकाश, आतम के दीप बुझाते हैं।।
अब घृत के लघु दीपक से भी, गुरु आरति मोह नशाएगी।
उन प्रज्ञापरिषह विजयी गुरु की, पूजन शांति दिलाएगी।।
ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

ईश्वर नहिं सृष्टी का कर्त्ता, यह जैनागम बतलाते हैं।
सब जीवों के ही कर्म स्वयं, उनको सुख-दुख दिलवाते हैं।।
उन कर्मों के नाशन हेतू, गुरुवर ने मुनिपथ अपनाया।
मैं भी अब धूप जलाकर चाहूँ, निज गुरु की शाश्वत छाया।।
ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

फल की इच्छा से ही सुभौम, चक्री की बुद्धी भ्रष्ट हुई।
नश्वर फल खाने में ही उसकी, जीवन लीला नष्ट हुई।।

मैं अविनश्वर फल हेतू अब, फल का यह थाल सजा लाया।
गुरु चरणों में फलथाल चढ़ाकर, तजूँ जगत ममता माया।
ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं....।
यह अष्टद्रव्य की सामग्री, मेरी पूजा का साधन है।
गुरु भक्ती ही कर सकती बस, दुर्गति का सहज निवारण है।।
आचार्य वीरसागर गुरु की, जो पूजा निशदिन करते हैं।
वे पूजक भी पुण्यास्त्रव कर, इक दिन अनर्घ्यपद वरते हैं।।
ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

दोहा

रत्नत्रय धारक मुनी, के पद में त्रय बार।
त्रयधारा जल से करूँ, मिले रत्नत्रय सार।।

शान्तये शान्तिधारा।

गुरुवर के उद्यान से, ज्ञान पुष्प को लाय।
पुष्पांजलि पद में करूँ, ज्ञान मुझे मिल जाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

हे मुनिवर! तुम कुछ बोले बिन, भी मोक्षमार्ग दरशाते हो।
बिन वस्त्राभूषण के भी तुम, सुन्दर स्वरूप दरशाते हो।।
तुम ब्रह्मचर्य की महिमा का, पावन दर्शन करवाते हो।
शिशु सम अविकारी नग्न रूपधर, सबके मित्र कहाते हो।।१।।

महाराष्ट्र प्रान्त में ईर ग्राम, माँ भाग्यवती जी कहलाई।
इक दिन सुन्दर सपना देखा, तब उनकी बगिया लहराई।।
थे पिता रामसुख हुये सुखी, आषाढ़ शुक्ल पूनम तिथि में।
वह तिथी गुरूपूर्णिमा बनी, सन् अट्ठारह सौ छियत्तर में।।२।।
बचपन में हीरालाल नाम, पाया हीरा सम चमक उठे।
कचनेर में विद्याध्ययन करा, पहले ही गुरु बन दमक उठे।।
चारित्रचक्रवर्ती गुरु को, परखा फिर गुरू बनाया था।
उनकी ही प्रथम शिष्यता का, सौभाग्य तुम्हीं ने पाया था।।३।।
गुरु ने समाधि से पूर्व तुम्हें, निज पट्टाचार्य बनाया था।
सन् उन्निस सौ पचपन जयपुर में, प्रथम पट्ट अपनाया था।
जैसे तव गुरु ने मुनि पथ को, बीसवीं सदी में दरशाया।
वैसे ही ज्ञानमती शिष्या ने, ब्राह्मी का पथ दिखलाया।।४।।
मुनि समन्तभद्राचार्य सदृश, तुम हुए परीक्षा में प्रधान।
गुरु मर्यादा की रक्षा कर, शिष्यों का रक्खा सदा ध्यान।।
तुमने इक बार कर्मप्रकृती, चिन्तन में निज को रमा दिया।
फोड़ा अदीठ का वैद्यराज, आप्रेशन करके चला गया।।५।।
सोचो तो रोम सिहरते हैं, क्या तुम पत्थर की मूरत थे।
मानव की काया में सचमुच, महावीर की सच्ची सूरत थे।।
गुरुदेव मुझे भी शक्ती दो, तन से ममता को छोड़ सकूँ।
संकट चाहे जितने आवें, सबसे मैं नाता तोड़ सकूँ।।६।।

सन् सत्तावन में आश्विन कृष्णा, मावस को तुम चले गये।
अपने शिष्यों को छोड़ समाधी, लिया स्वर्ग में चले गये।।
अब नहीं तुम्हारी काया है, लेकिन यशकाया जीवित है।
हम सभी तुम्हारी वंशावलि के, पत्र पुष्पमय कीरत हैं।।७।।
हे शांति सिन्धु के प्रथम शिष्य! तुमको युग का शत बार नमन।
तुम पहले पट्टाचार्य तुम्हारे, चरणों में चउसंघ नमन।।
गुणमाल आपकी पढ़ करके, मेरा मन आज हुआ पावन।
''चन्दनामती'' तुम चरणों में, धरती-अम्बर भी करे नमन।।८।।

ॐ ह्रीं आचार्यश्रीवीरसागरमुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा, पुष्पांजलिः

गीता छन्द

मुनि वीरसागर के चरण में, जो सतत वन्दन करें।
निज आत्मनिधि को प्राप्त कर, वे भी रत्नत्रय निधि वरें।।
निज आत्मरस के स्वाद में हो, मग्न यदि समता धरें।
तब ''चन्दनामति'' उभय लोकों, में वही सब सुख भरें।।

❖*इत्याशीर्वादः*❖

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

–स्थापना–

पूजन करो जी–

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं.....

पूजन करो जी,

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अष्टक–

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।

ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।२।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।३।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।४।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।५।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।६।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।७।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं॥
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।९।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शेरछंद- **हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।**
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा.....।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....।।

जयमाला

दोहा- **ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।**
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन-नागिन-मेरा मन डोले.....।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।

शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।। माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।१।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे, छोड़ी ममता माया।। माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।२।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने, ज्ञान की ज्योति जलाई।। माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।३।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।४।।

तीर्थ अयोध्या-मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।५।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।। माता...।।

महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।६।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
उनके कल्याणक तीर्थों का, जीर्णोद्धार कराया।।माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।७।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।८।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।९।।

दोहा- लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमति मात।।१०।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-शंभुछंद-

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें सदापूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह, आलोक जगत को मिले सदा।।

आचार्य श्री शांतिसागर चालीसा

दोहा

सन्मति शासन को नमूँ, नमूँ शारदा सार।
कुन्दकुन्द आचार्य की, महिमा मन में धार।।1।।
इसी शुद्ध आम्नाय में, हुए कई आचार्य।
सदी बीसवीं के प्रथम, शान्तिसागराचार्य।।2।।
ये चारित चक्री मुनी, गुरुओं के गुरु मान्य।
चालीसा इनका कहूँ, पढ़ो सुनो कर ध्यान।।3।।

चौपाई

जय श्री गुरुवर शान्तीसागर, मुनि मन कमल विकासि दिवाकर।।1।।
इस कलियुग के मुनिपथदर्शक, नमन करूँ गुरु चरणों में नित।।2।।
शास्त्रों में मुनियों की महिमा, लोग पढ़ा करते थे गरिमा।।3।।
भूधर द्यानत की कविताएँ, कहती हैं उन हृदय व्यथाएं।।4।।
वे तो तरस गये दर्शन को, आगम वर्णित मुनि वन्दन को।।5।।
नग्न दिगम्बर चर्या दुर्लभ, थी सौ वर्ष पूर्व धरती पर।।6।।
तब दक्षिण भारत ने पाया, एक सूर्य सा तेज दिखाया।।7।।
भोज ग्राम का पुण्य खिला था, वहाँ सुगन्धित पुष्प खिला था।।8।।
सत्यवती की बगिया महकी, भीमगौंडा की खुशियाँ झलकीं।।9।।
नाम सातगौंडा रक्खा था, बचपन से ही ज्ञानी वह था।।10।।
बाल विवाह किया बालक का, तो भी वह ब्रह्मचारीवत् था।।11।।
उनके मन वैराग्य समाया, जब श्री गुरु का दर्शन पाया।।12।।
श्री देवेन्द्र कीर्ति मुनिवर से, उन्नीस सौ तेरह इसवी में।।13।।
क्षुल्लक दीक्षा ली उत्तुर में, श्री शान्तीसागर बन चमके।14।।

फिर उन्निस सौ बीस में उनसे, दीक्षा ले मुनिराज बने थे।।15।।
मूलाचार ग्रंथ को पढ़कर, मुनिचर्या बतलाई घर–घर।।16।।
समडोली की जनता ने तब,पदवी दी आचार्य बने तुम।।17।।
संघ चतुर्विध बना तुम्हारा, जैनधर्म का बजा नगाड़ा।।18।।
दक्षिण से उत्तर भारत तक, कर विहार फैलाया था यश।।19।।
अंग्रेजों के शासन में तुम, पहुँचे इन्द्रप्रस्थ में ले संघ।।20।।
उनको गुरु का दर्श मिला था, जैन दिगम्बर पंथ खुला था।।21।।
धवल ग्रन्थ उद्धार कराया, नया प्रकाशन था करवाया।।22।।
पैंतिस वर्ष के मुनि जीवन में, साढ़े पच्चिस वर्ष तक तुमने।।23।।
उपवासों में समय बिताया, परम तपस्वी थी तुम काया।।24।।
सर्प ने तन पर क्रीड़ा कर ली, विष न चढ़ा पाया विषधर भी।।25।।
ली उत्कृष्ट समाधी तुमने, कुंथलगिरि पर सन् पचपन में।।26।।
भादों शुक्ला दुतिया तिथि में, करी समाधी प्रभु सन्निधि में।।27।।
पुनः वीरसागर मुनिवर ने, गुरु आज्ञा अनुसार शिष्य ने।।28।।
प्रथम पट्ट सूरी पद पाया, कुशल चतुर्विध संघ चलाया।।29।।
सन् उन्निस सौ सत्तावन में, शिवसागर आचार्य बने थे।।30।।
इसके बाद तृतीय पट्ट पर, था दिन सन् उन्नीस सौ उन्हत्तर।।31।।
धर्मसिन्धु आचार्य प्रवर बन, किया संघ का शुभ संचालन।।32।।
सन् उन्निस सौ सत्तासी में, चौथे सूरी अजित सिन्धु ने।।33।।
परम्परा क्रम में पद पाया, छत्तिस गुण को था अपनाया।।34।।
नब्बे सन् में पंचम पदवी, श्री श्रेयांससिन्धु मुनि को दी।।35।।
सन् उन्निस सौ बानवे से फिर, बने सूरि अभिनन्दनसागर।।36।।
संघ चलाते सक्षमता से, शिष्यों के प्रति वत्सलता है।।37।।
श्री चारित्र चक्रवर्ती की, परम्परा के छठे पुष्प ये।।38।।
बढ़ा रहे निज गुरु की महिमा, दिन–दिन बढ़ती संघ मधुरिमा।।39।।
चलता रहे यही क्रम उत्तम, निष्कलंक परमेष्ठि सूरि बन।।40।।

दोहा

नमन शान्तिसागर गुरू, नमन ज्ञानमति मात।
उनकी शिष्या चंदना–मती रचित यह पाठ।।1।।
वीर संवत् पच्चीस सौ, बाइस शुभ तिथि जान।
श्रावण कृष्णा अष्टमी, पूरण गुरु गुणगान।।2।।
गुरुमणि माला परम्परा, का हो जग में वास।
वीरांगज मुनि तक रहे, यह निर्दोष प्रकाश।।3।।

❖❖❖

आचार्य श्री वीरसागर चालीसा

शंभु छन्द

श्री देवशास्त्र गुरु वन्दन कर, पूर्वाचार्यों को नमन करूँ।
श्री कुन्दकुन्द की परम्परा में, शान्ति सिन्धु को नमन करूँ।।
उन प्रथम शिष्य पट्टाधिपती, आचार्य वीरसागर जी थे।
प्रभु महावीर के लघुनन्दन, छत्तिस गुण रत्नाकर ही थे।।१।।

दोहा

गुरु चरणों में नमन कर, करूँ सदा गुणगान।
चालीसा का पठन कर, लहूँ आत्मविज्ञान।।२।।

चौपाई

जय हो नग्न दिगम्बर मुनिवर, सत्यपंथ के धारक गुरुवर।।१।।
बिन बोले शिवपथ बतलाते, काया से जिनमत दर्शाते।।२।।
ब्रह्मचर्य की महिमा न्यारी, शिशु सम जातरूप अविकारी।।३।।
महाराष्ट्र के ''ईर'' ग्राम में, सेठ रामसुख के सुधाम में।।४।।
भाग्यवती का भाग्य खुल गया, नगरी का सौभाग्य खिल गया।।५।।
थी आषाढ़ शुक्ल की पूनम, गुरु पूर्णिमा कहें जिसको हम।।६।।
अट्ठारह सौ छियत्तर सन् में, हीरालाल नाम बचपन में।।७।।

हीरा और लाल बन चमके, मणियों की आभा सम दमके।।८।।
यौवन में नहिं ब्याह रचाया, ब्रह्मचर्य व्रत को अपनाया।।९।।
समन्तभद्राचार्य सदृश थे, गुरु परीक्षा में वे प्रमुख थे।।१०।।
शान्तिसिन्धु के सन्निध जाकर, मस्तक नहीं झुकाया वहाँ पर।।११।।
चर्चा करने बैठे उनसे, बोले तुम मुनि नहिं पहले से।।१२।।
गुरु ने पूछा प्रश्न उन्हीं से, कहो सामने वृक्ष कौन है?।।१३।।
बोले आम्रवृक्ष कहलाता, मौसम में यह फल है लाता।।१४।।
शान्तिसिन्धु ने वचन उचारे, ऐसे ही हम मुनिवर प्यारे।।१५।।
मोक्ष का जब मौसम आयेगा, यही रूप तब फल लायेगा।।१६।।
यह उत्तर सुन शिष्य प्रवर ने, कहा प्रभो! अब जाना मैंने।।१७।।
आज मोक्ष नहिं तो भी मार्ग है, खुला मोक्ष का क्रमिक द्वार है।।१८।।
हे गुरुदेव! समर्पित हूँ अब, शिष्य बना लो मुझे आप अब।।१९।।
सन् उन्निस सौ चौबिस में फिर, गुरु से ले ली दीक्षा मुनिवर।।२०।।
दस वर्षों तक गुरु सन्निध में, रत्नत्रय पाला चउसंघ में।।२१।।
पुनः मिली आज्ञा विहार की, जैन धर्म के शुभ प्रचार की।।२२।।
मिलते रहते थे आपस में, शिष्य गुरू सम्बन्ध प्रबल थे।।२३।।
संघ चतुर्विध बना तुम्हारा, भारत भर में था जो प्यारा।।२४।।
तत्वज्ञान था भरा हृदय में, रहते नित स्वाध्याय मगन थे।।२५।।
हुआ बड़ा फोड़ा अदीठ का, सभी संघ का मन कम्पा था।।२६।।
कैसे सहन वेदना करते, भक्त सभी रो रो कर कहते।।२७।।
डाक्टर ने आप्रेशन करके, देखी दृढ़ता वे भी चकित थे।।२८।।

समयसार का दृश्य दिखाया, शुद्धात्मा का सार बताया।।२९।।
शिष्यों का दुख दर्द पूछते, वत्सलता से उन्हें देखते।।३०।।
सन् पचपन में गुरुवर का पद, पाया तब आचार्य कहें सब।।३१।।
सन् छप्पन में एक परीक्षा, लेकर दी थी इक शुभ दीक्षा।।२।।
पहली क्वांरी कन्या आई, तुमसे आर्यिका दीक्षा पाई।।३३।।
ज्ञानमती यह नाम उचारा, बालसती का पथ विस्तारा।।३४।।
जयपुर में सन् सत्तावन का, चातुर्मास हुआ गुरुवर का।।३५।।
आश्विन कृष्ण अमावस आई, सूरिप्रवर की हुई विदाई।।३६।।
तन से आत्मा पृथक् हो गई, मुख्य लक्ष्य की सिद्धि हो गई।।३७।।
जयपुर खान्या में प्रतीक है, चरण चिन्ह जहाँ पर निर्मित है।।३८।।
प्रथम पट्टसूरी के पद में, मेरी शब्दांजलि अर्पित है।।३९।।
परम्परा से मुक्ति मिलेगी, इस भव में गुरुभक्ति मिलेगी।।४०।।

दोहा

वीरसिन्धु आचार्य का, यह चालीसा पाठ।
पढ़ते जो श्रद्धा सहित, वे पाते निज ठाठ।।१।।
वीर संवत् पच्चीस सौ, बाइस शुभ तिथि जान।
भादों सुदि दुतिया तिथि, लेते सब गुरुनाम।।२।।
ज्ञानमती गणिनी प्रमुख, की शिष्या अज्ञान।
रचा ''चन्दनामति'' सुखद, यह गुरुवर गुणगान।।३।।

❖❖❖

बारहमासा श्री ज्ञानमती माताजी का

(तर्ज–मुक्तिपथ का पथिक...)

बारहमासा सुनो ज्ञानमति मात का,
जिनने निज में समाया सभी मास को।
सारा संसार विषयों का स्वादी बना,
तब ये तज कर चलीं सब विषय आश को।।१।।

चैत्र महीना बसन्ती गुलाबी ऋतू,
जिसको नर नारी कहते हैं अपना हितू।
कृष्ण एकम को तुम क्षुल्लिका बन गईं,
षोडशी सोलहकारण व्रती बन गईं।
चैत्र का मास सचमुच सफल हो गया,
क्योंकि तुममें समा ही गया मास वो।।१।।
बारहमासा.....

मास वैशाख में ग्रीष्म ऋतु आ गई,
पेय द्रव्यों की ठण्डी बहारें चलीं।
कृष्ण दुतिया को तुम आर्यिका बन गईं,
ज्ञान की कैसी ठण्डी फुहारें चलीं।
मास वैशाख सचमुच सफल हो गया,
आर्यिका ज्ञानमतिमय बना मास वो।।२।।
बारहमासा.....

ज्येष्ठ में लू हवा गर्म चलने लगी,
घर में छुप छुप पिपासा मचलने लगी।
कोमलांगी की पदयात्रा चलती रही,
रक्त की धार पैरों से बहती रही।
ज्येष्ठ का मास सचमुच सफल हो गया,
मात से प्राप्त कर ज्ञान की प्यास को।।३।।
बारहमासा.....

मास आषाढ़ में वर्षा ऋतु आ गई,
तप रही यह धरा तृप्ति कुछ पा गई।
वर्षायोग स्थापन करें मात श्री,
जिस नगर ने तुम्हें पाया वह धन्य भी।
मास आषाढ़ सचमुच सफल हो गया,
प्राप्त कर ज्ञानमति के चतुर्मास को।।४।।
बारहमासा.....

मास श्रावण में ललनाएँ गाने लगीं,
झूलकर रक्षाबन्धन मनाने लगीं।
ध्यान स्वाध्याय में लीन यह संघ है,
आर्यिका संघ में ज्ञान का रंग है।
श्रावणी मास सचमुच सफल हो गया,
पाके गणिनी शिरोमणि श्रुताभ्यास को।।५।।
बारहमासा.....

भाद्रपद मास पर्वों को ले आ गया,
जग के नर नारियों को भी यह भा गया।
शक्तितस्तप व उपदेश माता करें,
उनकी शिष्या जी उपवास बत्तिस धरें।
भाद्रपद मास सचमुच सफल हो गया,
पाके तपसी व श्रुतज्ञानि के वास को।।६।।

बारहमासा....

मास आश्विन दशहरा दिखाने लगा,
शरद ऋतु आगमन को बताने लगा।
उसकी ही पूर्णिमा ने दिया मात को,
है शरद पूर्णिमा रात्रि विख्यात वो।
आश्विनी मास सचमुच सफल हो गया,
जन्म के दिन ही माँ ने लिया त्याग को।।७।।

बारहमासा.....

मास कार्तिक सुहाना समय आ गया,
पर्व दीपावली का समां छा गया।।
मात श्री वर्षायोग समापन करें,
आर्यिका के व्रतों का सुपालन करें।
कार्तिकी मास सचमुच सफल हो गया,
प्राप्त कर वीर निर्वाण नव आस को।।८।।

बारहमासा.....

मास मगशिर विवाहोत्सवी मास में,
नव वधू लाल मेंहदी रचे हाथ में,
ज्ञानमति मात की लेखनी चल रही,
ज्ञान की ज्योति उनके हृदय जल रही।
मास मगशिर भी सचमुच सफल हो गया,
प्राप्त कर ज्ञानमति मात सी मात को।।९।।

बारहमासा.....

पौष में बर्फ सी ठण्ड पड़ती सदा,
जग के प्राणी विषय भोगते सर्वदा।
हस्तिनापुर से जंगल की सर्दी में भी,
ज्ञानमति माताजी सर्वदा खुश रहें।
पौष का मास सचमुच सफल हो गया,
पाके सुकुमारिका के अजब त्याग को।।१०।।

बारहमासा.....

माघ महिना भी टपका रहा शीत को,
ज्ञान बिन जो मनुज होते भयभीत वो।
ज्ञान की ले बसन्ती हवा मात श्री,
ज्ञान आराधना में सदा लीन भी।
माघ का मास सचमुच सफल हो गया,
जिसने पाया बसन्ती सुधा प्यास को।।११।।

बारहमासा.....

मास फाल्गुन गुलालों के संग आ गया,
सबपे होली के मौसम का रंग छा गया।
ज्ञान पिचकारी से होली खेलें वे भी,
ज्ञानमति नाम सार्थक करें मात श्री।
फाल्गुनी मास सचमुच सफल हो गया,
प्राप्त कर आर्यिका ब्राह्मी सी मात को।।१२।।

बारहमासा....

''चन्दनामति'' ने यह बारहमासा रचा,
देखकर जिनने जीवन स्वयं मात का।
वीर निर्वाण पच्चीस सौ उन्नीस में,
माघ कृष्णा त्रयोदशि की रचना है ये।
सारी ऋतुएं भी माँ के चरण झुक नई,
दीर्घकालिक तपस्या की ले आश को।।१३।।

बारहमासा.....

इसको पढ़ करके चिन्तन मनन जो करे,
बारहों मास अपने सफल वो करे।
ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमन्त में,
ऋतु बसन्तादि ये षट् जो प्राणी सहें।
मेरा जीवन बने ज्ञानमति मात सम,
मेरी रचना में भी इक यही आश हो।।१४।।

बारहमासा.....

❖❖❖

भजन-१

तर्ज-तेरी दुनिया से दूर.....

गुरुवर शान्तीसागर, थे इस युग के रत्नाकर, उन्हें याद रखना।। टेक.।।
सुनते हैं जो इनकी मुनिचर्या की कहानी, रोमाँच होता है।
रोमाँच होता है, मन में भान होता है।
उनके जैसा त्यागी, तपस्वी कोई मुनिवर, न प्राप्त होता है।
न प्राप्त होता है, न प्राप्त होता है।
थे वे ज्ञान के भण्डार, उनमें शांति थी अपार, उन्हें याद रखना।।१।।
बीसवीं सदी के चारित्र चक्रवर्ती, श्री शान्तिसागर जी,
श्री शान्तिसागर जी, गुरुवर शान्तिसागर जी
मुनिपथ प्रदर्शक, आचार्य प्रथम थे वे चउसंघ नायक जी,
चउसंघ नायक जी, गुरुवर मूलनायक जी।।
थे दश धर्मों के भण्डार, उनमें धैर्य था अपार, उन्हें याद रखना।।२।।
भादों सुदी दुतिया को पुण्यतिथि उनकी मनाते हैं सभी,
मनाते हैं सभी, उनको ध्याते हैं सभी।
उनकी स्मृतियों के दर्पण में निज को, सजाते हैं सभी,
सजाते हैं सभी, निज को ध्याते हैं सभी।।
उनकी यादों का संसार, ''चन्दना'' है भण्डार, उन्हें याद रखना।।३।।

❖❖❖

भजन-२

सन्तों का तुम्हें नमन है, युग पुरुषों का वन्दन है।
श्री चारित्रचक्रवर्ती गुरु, शत शत अभिवन्दन है।।
मुनिराज चरणवन्दन है, ऋषिराज.....

आदिनाथ से महावीर तक जिनचर्या बतलाई।
कुन्दकुन्द ने उसी तरह की मुनिचर्या अपनाई।।
शांतिसिन्धु भी उसी श्रृंखला के ही लघुनन्दन हैं।
मुनिराज चरणवन्दन है, ऋषिराज.....।।१।।

दक्षिण भारत वसुन्धरा का है इतिहास गवाही।
भोजग्राम माँ सत्यवती का पुत्र मुक्तिपथ राही।।
प्रथम बने आचार्यप्रवर युगप्रमुख तुम्हें वन्दन है।
मुनिराज चरणवन्दन है, ऋषिराज.....।।२।।

लुप्तप्राय यतिचर्या को जीवन्त किया था तुमने।
नग्न दिगम्बर मुद्रा को श्रुतवंत किया था तुमने।।
इसीलिए ''चन्दनामती'' जग करता तब वन्दन है।
मुनिराज चरणवन्दन है, ऋषिराज चरणवंदन है।।३।।

❖❖❖

भजन-३

तर्ज- चल दिया छोड़.....

श्री शांतिसिंधु मुनिराज, जगत सिरताज, प्रथम ऋषिराजा
युग के मुनि मार्ग विधाता।।
थे भोजग्राम के राजकुंवर।
माँ सत्यवती के पुत्रप्रवर।।
जन्मे जग के कल्याण हेतु सुखदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।१।।
जैसे रवि तिमिर भगाता है।
जग में प्रकाश फैलाता है।
यूं ही मिथ्यात्व तिमिर नाशक गुरु गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।२।।
मुनि के दर्शन जब दुर्लभ थे।
देवेन्द्र कीर्ति इक गुरुवर थे।।
वे बने शांतिसागर मुनि के निर्माता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।३।।
मुनिचर्या तब जीवन्त हुई।
जिनवाणी सार्थक सिद्ध हुई।।
कलियुग भी सत्पुरुषों का जन्म प्रदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।४।।

है वर्तमान गौरवशाली।
उस एक वृक्ष की ही डाली।।
फल फूल रही वंशावलि गौरव गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।५।।
आचार्य प्रथम वे मान्य हुए।
युग में सबसे प्राधान्य हुए।।
उत्कृष्ट समाधीकरण सही बतलाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।६।।
हम भी परोक्ष यशगान करें।
गुरुवर का मन में ध्यान करें।।
''चन्दनामती'' वन्दना करें नत माथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।७।।

❖❖❖

मराठी

बाबानो संयम धारण करा, भिऊ नका।

हिन्दी

भव्यात्माओं ! संयम धारण करो, डरो मत।

-चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

भजन-४

तर्ज- ये क्या है?.....

हम ज्ञानमती माता को वन्दन करते हैं।
निज श्रद्धा पुष्प चरण में अर्पण करते हैं।।
ये माँ हैं! सारे जग की। गणिनी माँ है इस वसुधा की,
इनकी छवि ऐसी लगती है, शारद माँ जैसी लगती है,
ये माँ है.....
ये बाल ब्रह्मचारिणी आर्यिका बन आईं।
बीसवीं सदी की पहली माता कहलाईं।।
ये माँ है! सारे जग की। गणिनी माँ हैं इस वसुधा की।
ये तो करूणा की मूरत हैं, माँ सरस्वती की सूरत हैं।।१।।
ये रूखा सूखा खाकर अमृत देती हैं।
निज ज्ञान के सागर से गागर भर देती हैं।।
ये माँ हैं! सारे जग की। गणिनी माँ हैं इस वसुधा की।
ये वीर सिंधु की शिष्या हैं, इनकी भी अनेकों शिष्या हैं।।२।।
रच दिये शताधिक ग्रंथ ज्ञान की गरिमा से।
पूजा विधान हैं प्राप्त तुम्हारी महिमा से।।
ये माँ हैं! सारे जग की। गणिनी माँ हैं इस वसुधा की।
ये शिवपथ साधन करती हैं। श्रुतज्ञानाराधन करती हैं।।३।।

इनके तप से कितनों ने, लाभ उठाया है।
इनके जप ने विघ्नों को, दूर भगाया है।।
ये माँ हैं! सारे जग की। गणिनी माँ हैं इस वसुधा की।
ये जिनशासन की महिमा है, इनकी विस्तृत गुण गरिमा है।।४।।
ये संघर्षों से कभी नहीं, घबराती हैं।
''चन्दना'' तभी ये शीघ्र, विजय पा जाती है।।
ये माँ है सारे जग की। गणिनी माँ हैं इस वसुधा की।
ये शूल को फूल बनाती हैं, जग को अनुकूल बनाती हैं।।५।।

❖❖❖

किसी भी कार्य को करने में मध्यममार्ग का अनुसरण करो
न अधिक सोचो न बिना सोचे करो।
-गणिनी ज्ञानमती माताजी

आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की आरती

धुन- नागिन.....

जय जय गुरुवर, हे सूरीश्वर, श्री शान्तिसिन्धु मुनिराज की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।
जग में महापुरुष युग का, परिवर्तन करने आते।
अपनी त्याग तपस्या से वे, नवजीवन भर जाते।।
गुरू जी नवजीवन.....
जग धन्य हुआ, तव जन्म हुआ, मुनि परम्परा साकार की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।१।।
कलियुग में साक्षात् मोक्ष की, परम्परा नहिं मानी।
फिर भी शिव का मार्ग खुला है, जिस पर चलते ज्ञानी।।
गुरू जी जिस पर.....
मुनि पद पाया, पथ दिखलाया, चर्या पाली जिननाथ की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।२।।
मुनि देवेन्द्रकीर्ति गुरुवर से, दीक्षा तुमने पाई।
भोज ग्राम माँ सत्यवती की, कीर्तिप्रभा फैलाई।।
गुरू जी कीर्तिप्रभा.....
हे शान्तिसिन्धु, हे विश्ववन्द्य, तेरी महिमा अपरम्पार थी
मैं आज उतारूँ आरतिया।।३।।

परमेष्ठी आचार्य प्रथम तुम, इस युग के कहलाए।
सदियों सोई मानवता को, आप जगाने आए।।
गुरू जी आप.....
तपमूर्ति बने, कटुकर्म हने, उत्तम समाधि भी प्राप्त की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।४।।
श्री चारित्रचक्रवर्ती के, चरणों में वन्दन है।
अहिविष भी ''चन्दनामती'', तव पास बना चन्दन है।।
गुरू जी.....
भव पार करो, कल्याण करो, मिल जावे बोधि समाधि भी,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।५।।

❖❖❖

सुई का काम करो,
कैंची का नहीं।
जिन वचन की श्रद्धा में पत्थर की तरह अचल रहो,
तिनके की तरह हल्के-फुलके नहीं।
-आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के अनमोल वचन

आचार्य श्रीवीरसागर महाराज की आरती

ॐ जय जय गुरुदेवा, स्वामी जय जय गुरुदेवा।
जिनवर के लघुनन्दन-२, वीर सिन्धु देवा।।ॐ जय.।।
तिथि आषाढ़ सुदी पूनो को, ईर ग्राम जन्मे। स्वामी.....
भाग्यवती माँ पिता रामसुख, तुमको पा हर्षे।।ॐ जय.।।१।।
गुरू पूर्णिमा धन्य हुई तिथि, तुम सा गुरु पाकर। स्वामी.....
हीरालाल नाम पा, बन गये रत्नाकर ।। ॐ जय.।।२।।
श्रीचारित्रचक्रवर्ती के, प्रथम शिष्य माने। स्वामी.....
पट्टाचार्य प्रथम बन-२, निज पर को जानें।।ॐ जय. ।।३।।
संघचतुर्विध के अधिनायक, छत्तिस गुणधारी। स्वामी.....
गुरूपूर्णिमा के दिन जन्मे-२, गुरुपद के धारी।।ॐ जय.।।४।।
आश्विनवदि मावस को, मरण समाधि हुआ। स्वामी.....
जीवन मंदिर पर तब-२, स्वर्णिम कलश चढ़ा।। ॐ जय. ।।५।।
गुरु आरति से मेरा, आरत दूर भगे। स्वामी.....
तभी ''चन्दनामती'' हृदय में, आतम ज्योति जगे।। ॐ जय.।।६।।

परम पूज्य गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल आरती

तर्ज- कभी राम बन के.....

भक्ति भाव लेकर, दीपक थाल लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम ।।

तुम ज्ञानमती कहलाईं,

तुम बालसती बन आईं,

दीपक हाथ लेकर, सबको साथ लेकर, गणिनीमाता की आरती करें हम।।१।।

इतिहास की तुम निर्मात्री,

कई तीर्थों की प्रेरणाप्रदात्री,

नई याद लेकर, फरियाद लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।२।।

जम्बूद्वीप बना है धरा पर,

जिससे चमक रहा हस्तिनापुर,

वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।३।।

मांगीतुंगी अयोध्या में जाकर,

किया निर्माण नूतन वहाँ पर,

वही याद लेकर, भक्ति साथ लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।४।।

पुनः तीरथ प्रयाग बनाया,

ऋषभ जिनवर का नाम गुंजाया,

पुण्यधाम लेकर, तेरा नाम लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।।५।।

वीर जन्मभूमि का यश बढ़ाया,

कुण्डलपुर का विकास कराया,

श्रुत का सार लेकर, आधार लेकर, गणिनीमाता की आरती करें हम।।६।।

तुम युग-युग जिओ मेरी माता,

''चन्दना'' गाएँ सब तेरी गाथा,

श्रद्धाभाव लेकर, दीपक थाल लेकर, गणिनी माता की आरती करें हम।७।।

❖❖❖